International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 197-199

विज्ञापन का इतिहास

डॉ0 रूपेश कुमार सिन्हा [1]
[1] प्रवक्ता–चित्रकला, स्वर्ण जयंती महाविद्यालय, पिपराइच, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

विज्ञापन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता की इतिहास। इस दृष्टिकोण से मानव सभ्यता का इतिहास विज्ञापन का इतिहास कहा जा सकता है। ईसा से लगभग ढ़ाई तीन हजार वर्ष पूर्व विद्यमान हड़प्पा और मोहनजोदड़ों नगरों के उपलब्ध अवशेष इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत में अनेक किस्मों की कलाओं का बोलबाला था। खुदाई में पत्थर से गढ़ी हुई आकृतियाँ, कास्य–तांबे और पीतल से बनाई गयी मूर्तियाँ, मिट्टी से निर्मित कला–कृतियाँ, हाथी के दांत से निर्मित वस्तुएं और खिलौनो और वास्तुकला के अनेक नमूने आदि प्राप्त हुए हैं, जो इसका प्रमाण है कि भारत कलाओं में समृद्ध था। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा तथा लोथल आदि स्थानों से हजारों मोहरें मिली हैं जिन पर मानव, पशु, वृक्ष आदि की आकृतियाँ बनी हैं। प्रायः अज्ञात लिपि में चित्राक्षर लेख भरी हैं, जिन्हें अभी तक ठीक से पढ़ा नहीं जा सकता है। विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि इन लेखों में व्यक्तियों, व्यापारियों अथवा देवताओं के नाम हैं। सिन्धु घाटी के इन नगरों से प्राप्त कतिपय मोहरों के अंकन बेबीलोनिया के पुरातात्विक उत्खननों में पायं गये हैं जिनसे यह प्रकट होता है कि भारतीय माल की गांठों पर वे यहाँ के व्यापारियों की मोटरों द्वारा अंकित किये गये होंगे।

उपरोक्त जिक्र की गयी मोहरें आज के ट्रेडमार्क का आदि रूप ही तो है। आज विज्ञापनों में जिस कला के दर्शन होते हैं उसकी नींव में हमारे सदियों पुराने कला–आधार मौजूद हैं। इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि सिन्धु–सभ्यता के काल में लिपि विद्यमान थी, जिसके माध्यम से लोग विचारों का आदान–प्रदान करते थे। निश्चय ही इस लिपि का इस्तेमाल व्यापारिक कामों में और माल बेचने से समबन्धित कार्यवाहियों में होता होगा। निश्चय ही इन्दू लिपि संचार एवं प्रचार का और एक प्रकार से विज्ञापन का भी माध्यम रही होगी।

जहाँ तक विज्ञापन के प्रारम्भ का सवाल है, ऐसा कहा जाता है कि दुनिया का सबसे पहला विज्ञापन भारत में बना। आज से डेढ़ हजार वर्ष पहले भारतीय व्यापारियों के ''रेश्मी वस्त्र बुनकर व्याापरी संघ'' द्वारा प्राचीन कुमार गुप्तकालीन एक सूर्य मन्दिर में विज्ञापन लगवाया गया था, जो वर्तमान दशपुर (मंदसौर) मध्य प्रदेश में स्थित है। काव्य रूप में यह विज्ञापन इस प्रकार था–

तासण्य कान्त्यु पचितोडपि सुवर्ण हार
ताम्बूल पुष्पविधिना समलङ् कृतोडपि
नीर जनः प्रि (श्रि) यभुवैति न तावदग्यां
यावत्र पट्टमयवस्त्र युगानि धन्त।।

अर्थात चाहे जितना भी यौवन तन पर फूट पड़ा हो कान्ति अंग–अंग पर छितराई पड़ी हो, अंग आलेपन (क्रीम) युक्त हों, होंठ क्यों न ताम्बूल से लाल रचे हुए हों, फूल से से वेणी गुंथी हों, कलियों से मांग भरी हो, समझदार नारी तब तक अपने प्रिय या पति के पास नहीं आती जब तक कि वह हमारे द्वारा बुने रेशम का जोड़ा धारण नहीं कर लेती अन्यथा उसका प्रिय उसे स्वीकार नहीं करेगा।

विश्व फलक पर आज विज्ञापन का जो बहुआयामी स्वरूप विकसित हुआ है, उसके पीछे विज्ञापन की एक लम्बी कहानी है। उसकी पृष्ठभूमि विश्व के प्राचीन इतिहास में समाई हुई है। विज्ञापन एक प्रकार का सम्प्रेषण है, जो संदेश ग्रहणकर्ता पर संदेश की प्रभावी प्रतिक्रिया से प्रेरित होता है। निश्चय ही मानव सभ्यता के उदय के साथ ही मानवीय सम्प्रेषण की आवश्यकता के लिए विज्ञापन का अस्तित्व रहा होगा। मानव सभ्यता के प्रारम्भिक चरण में जनता को अनुशासित, नियंत्रित करने तथा जनमत की स्वपक्ष में प्रभावित करने के लिए जो प्रयास किए जात थे, उनमें विज्ञापन की पृष्ठभूमि निहित है। यह बात और है कि उस समय के विज्ञापन का स्वरूप आज के ग्लैमरस विज्ञापनों से बिलकुल भिन्न था।

विश्व के प्रसिद्ध इतिहासयज्ञों और पुरातत्ववेताओं को इस बात के प्रमाण मिले हैं कि प्राचीन काल में शासक प्रजा को जिन नियमों से अनुशासित करना चाहते थे, उन नियमों को प्रजा की जानकारी के लिए सार्वजनिक स्थानों पर भित्ति, पट्ट आदि पर खुदवा दिया जाता था।

इसी प्रकार सम्राट अशोक ने अपने विचारों, राजाज्ञाओं, धार्मिक उपदेशों और सरकारी आदेशों को शिलाओं पर उत्कीर्ण कराने का असाधारण प्रयत्न किया, वह भी विज्ञापन का एक रूप कहा जा सकता है।

सम्राट अशोक ने शिलालेखां पर अनेक सुचनाएं उत्कीर्ण करयी, इन्हीं सूचनाओं में जगदीश्वर चतुर्वेदी विज्ञापन की पृष्ठभूमि तलाशते हैं– ''प्राचीन भारतीय समाज में विज्ञापन का लक्ष्य धार्मिक विचारों का प्रचार करना था। सम्राट अशोक के स्तंभों और भित्ती संदेशों, गुफा चित्रों आदि को 'आउटडोर' विज्ञापन का पूर्वज कह सकते हैं। 'इंडोर विजुअल' सम्प्रेषण कला के पूर्वज के रूप में अजंता, सांची और अमरावती की कलाओं को पढ़ा जा सकता है।''

विजय कुलश्रेष्ठ और प्रतुल अथइया राजस्थान पत्रिका के हवाले से लिखते हैं कि आज से तीन हजार वर्ष पूर्व मिस्र में विज्ञापनों का उपयोग श्रीमंतो के घरों से भागे हुए दासों को पकड़ने वालों के लिए उचित पुरस्कार देने की घोषणा के लिए किया जाता था। ये विज्ञापन उस काल में भोजपत्र (पेपरिस) पर लिखे जाते थे। ढाई हजार वर्ष पूर्व मकान किराए पर दिए जाने के विज्ञापन का उल्लेख भी मिलता है–''आगामी एक जुलाई से आरियोपोलियन हवेली में कई दुकानें भाड़े पर दी जाएंगी। दुकानों में ऊपर रहने के कमरे हैं। दूसरी मंजिल के कमरे राजाओं के रहने योग्य हैं– अपने निजी मकान के समान। मेरियस के क्रीतदास प्राउमस से आवेदन कीजिए।''

पहले लिखित विज्ञापन के बारे में यदयपि प्रामाणिक जानकारी नहीं है, लेकिन विज्ञापनों के प्रारम्भिक स्वरूप की चर्चा में इजिप्ट में थीब्ज के खुदाई के दौरान मिली पांडुलिपि के अवशेष, जो कि तीन हजार वर्ष पहले लिखी गई थी, को उद्धृत किया जाता है। इसमें शैवाल से तैयार किए गए कागज पर विज्ञापन के रूप में शीम (Shem) नामक एक भगोड़े दास के लौटने वाले को एक सोने का सिक्का इनाम में दिए जाने की घोषणा की गई है। जो कि एक स्टैच्यू के रूप में बना है। उस स्टैच्यू की खोज एक परातात्वविद द्वारा खुदाई के दौरान प्राप्त हुयी थी, जो कि एक प्राचीन शहर शेब्स में खुदाई के दौरान मिली।

कुछ विज्ञापन जो पाम्पई शहर में प्राप्त हुए हैं। उस शहर में एक स्थान पर शुद्ध लैटिन भाषा में एक विज्ञापन लिखा हुआ प्राप्त था, वह विज्ञापन था– ''अगले जुलाई के प्रथम दिन से फूलों की दुकान पर जो तरह–तरह के फूल व पौधे रखे गये हैं, वह दुकान एरियस पोल्यु बलॉक (Arius Pollio Block) में है, जो जिनस मारियस (Ginus Marius) का है।''

''एक ताँबे का बर्तन इस दुकान से प्राप्त है, जो 65 सिस्ट्रेसेस (Sesterces) में हैं; जो कि एक चोर द्वारा चुरा लिया गया है जो व्यक्ति इसे वापस दिला देगा, उसको अलग से पारितोषिक दिया जायेगा।

प्राचीन काल में रोम के लोगों को सूचनायें देने का पहला उदाहरण मिलता है जो कि खेल, मनोरंजन के स्थान इत्यादि के बारे में होता था जो कि दिवारों पर पेन्ट किया हुआ होता था। कुछ दिनों के बाद पेन्टिग्स के स्थान को विज्ञापन पोस्टरों द्वारा शुरू की गयी। पोस्टरों द्वारा विज्ञापित चीजें प्राचीन शहर पाम्पई में मिलती हैं।

छपाई के अविष्कार से पहले प्राचीनकाल में विज्ञापनों के लिए कई अन्य रास्ते तलाश करते थे। उदाहरण के रूप में ईसा से पूर्व विश्व की अनेक सभ्यताओं में ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिनमें डुगडुगी बजाकर लोगों को इकट्ठा करके सूचना देने की प्रथा थी उदाहरणार्थ– ''ईसा से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब यूनान में दास प्रथा का बोलबाला था, वहाँ के शासक अपनी प्रजा के मनोरंजन हेतु बड़े–बड़े दास (ग्लेडियेटर्स) युद्धों का आयोजन भी करते थे। जिसमें कहा जाता था कि हार जीत का निर्णय किसी एक दास की मृत्यु हो जाने पर ही होता था। उन स्थानों को जहाँ दास युद्ध होते थे, एम्फीथियेटर (दर्शकदीर्घा) कहते थे और उनकी क्षमता 50 हजार दर्शक तक भी हाती थी। इतने दर्शकों को एकत्रित करने के लिए बड़े पैमाने पर विज्ञापन किये जाते थे। दीवारों पर भी पोस्टर लगाये जाते थे, डुगडुगी पीटने वाले अपने परम्परागत ढ़ंग से लो प्रचार करते ही थे। शासकों द्वारा अधिकृत रूप से नगर उद्घोषक नियुक्त किये जाते थे जो गली–गली जाकर राजज्ञाओं एवं अधिकृत सुचनाओं का प्रसारण करते थे।

ऐतिहासिक सूत्रों के अनुसार विज्ञापन के प्रारम्भिक चरण में विक्रेता ऊँची आवाज में बड़े रोचक और नाटकीय अंदाज में अपने माल की खुबियों का वर्णित करता था यानि गलियों और सड़कों पर फेरीवाले आवाज लगाते हुए अपनी वस्तुओं का विज्ञापन करते थे, इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए यह कहा जा सकता है कि लिपि का उदभव होने से पूर्व तक चीन और यूनान में सूचना देने का काम नगर उद्घोषकों का ही था, आगे चलकर इन नगर उद्घोषकों का इस्तेमाल व्यपारियों द्वारा भी किया जाने लगा जो घोषणा करते थे कि कहाँ क्या चीज उपलब्ध है, मुद्रण युग के पूर्व का विज्ञापन का इतिहास बहुत रोचक है, पहले के विक्रेता अपनी आवाजों द्वारा वस्तुओं का प्रचार करता था। सबसे पहले हीब्रू, ग्रीक और रोमन जाति की सभ्यताओं द्वारा अपने वस्तुओं के प्रचार के लिए समूहों में जाकर अपने वस्तुओं का विज्ञापन की शुरूआत की गयी, बाजारों में बोली लगाने वाले तथा समानों को बेचने वाले अपने वस्तुओं का प्रचार जोर–जोर आवाज से करते थे; ये सभी चीज आजकल विश्व में सामान्य हो गयी है, भारत में भी ऐसा ही हो रहा है। प्राचीन समय में मुख्य बाजारों में ही बोली लगाने वाले अपने वस्तुओं का प्रचार करते थे। वास्तव में विक्रेता छोटे जगहों से लेकर के कस्बों और शहरों तक अपने समानों की बिक्री के लिए जोर–जोर से आवाज लगाकर प्रचार का रूप देते थे। बाद में चना बेचने वालों के ये बोल बहुत चर्चित भी हुए–''बाबू मैं लयाया मजेदार चना जोर गरम, मेरा चना बना है आला'' अनोखे स्वरों द्वारा अपने माल को विज्ञापित कर खरीदारों को आकर्षित करने की यह कला आज भी बनी हुयी है। गाँव, कस्बों और शहरों की गलियों में ठेले और साइकिल पर अपना सामान बेचने वाले छोटे–छोटे विक्रेता इसी कला का सहारा लेते हैं।

डिक सटेफन के अनुसार– ''बुनकरों का चक्र बनुकर को इंगित करता था। यदि एक बोर्ड दरवाजे के आगे टँगा है तो वह किसी होटल का संकेत देता था। यदि एक स्वर्णिम हाथ हथौड़ा लिए हुए दर्शाया जाता, तो उसका अर्थ स्वर्णकार से लिया जाता था। प्रत्येक छोटे से छोटे दुकानदार इस प्रकार अपनी दुकान की दीवारों पर निर्मित करते हैं, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह दुकानदार डबल रोटी, शराब, प्लेट–प्याले अथवा किसी अन्य वस्तु की है, एक प्राचीन शहर ''पोम्पेई में मिले अनेक अवशेषों से यह पता लगता है कि दुकानों के बाहर दीवारों पर ऐसे चिन्ह अंकित थे, जिनको देखकर राहगीर को यह पता चल जाता था कि अमुक दुकान के भीतर कौन सा माल उपलब्ध है– आटा, पावरोटी, शराब, कपड़ा, बर्तन, दुग्ध उद्योग का चिन्ह, एक बेकरी और हरक्यूलेनियम में जूता बनाने का चिन्ह मिला था।

मानवीय सभ्यता के विकास के साथ–साथ विज्ञापन के स्वरूप में भी बदलाव आता चला गया है। व्यापारिक चिन्हों को लकड़ी धातु अथवा पत्थर पर चित्रित कर सूचना–पट्ट का निर्माण किया गया; प्राचीन रोम में साइन बोर्ड का प्रयोग विविध रूपों में किया जाता था जो कि दुकानों की सुन्दरता को बढ़ाती थी, बाद में दुकानदारों व व्यापारियों नें धातु या लकड़ी के पट्टों पर ऐसे संकेत लगाकर बाहर टाँगना प्रारम्भ कर दिये, आज वाहनों के पीछे बस स्टॉप आदि पर जो होर्डिंग या नियोन साईन दिखाई पड़ते हैं, वे प्राचीनकाल में मौजूद सूचना–पट्ट का विकसित स्वरूप कहा जा सकता है, जब ऐसे संकेतों–निशानों की संख्या बढ़ गयी तो सरकार द्वारा इंग्लैण्ड में उन्हें मान्यता देनी पड़ी। इन्हीं निशानों और बोर्डों का आज आधुनिक रूप है बाहय स्थलों पर लगी हुए होर्डिंग और जगमगाते बिजली के सूचना – बोर्ड – नियोन साईन।

पुरतत्विक खोजों और इतिहास में उपलब्ध जानकारियों के अनुसार ग्रीस, रोम और चीन में विज्ञापन के लिए चित्रलिपि का प्रयोग किया जाता था, विक्रेता बाद में अपने सामानों के ऊपर तरह–तरह के चित्र व ग्राफ द्वारा अनपढ़ क्रेता को भी अपनी बात समझा देते थे जो विज्ञापन का रूप था, उत्पादक अपनी वस्तुओं पर कोई चिन्ह, चित्र या हस्ताक्षर अंकित कर देते थे, ताकि उनके उत्पाद को पहचानने में ग्राहकों को किसी प्राकर की असुविधा न हो। इसी तरह ग्रीस और रोम के व्यापारी अपनी दुकानों के प्रवेश–द्वार पर माल के चिन्ह इस रूप में चित्रित करते थे, जिससे उपभोक्ताओं को दुकान में उपलब्ध वस्तुओं की जानकारी मिल सके। इनसे यह पता चल जाता था कि दुकान खाद्य सामग्री की है, बरतनों की है, कपड़ों की है अथवा किन्हीं अन्य वस्तुओं की।

सही अर्थों में विज्ञापन के इतिहास का प्रारम्भ पन्द्रहवी शताब्दी में मुद्रण कला के अविष्कार के साथ हुआ। नए विचारों के प्रवाह को जन–जन तक पहुँचाने के लिए मुद्रण कला का सहारा लिया गया।

यद्यपि मुद्रण कला सूत्र पात चीन में हुआ। इतिहासकार आधुनिक मुद्रण कला का श्रेय पश्चिमी जर्मनी के गुटनबर्ग को देते हैं। गुटनबर्ग ने 42 पंक्तियों की विश्व की पहली मुद्रित पुस्तक 'बाइबिल' का प्रकाशन किया। मुद्रण कला के अविष्कार और विस्तार के साथ ही यातायात व संचार के विभिन्न साधन भी उपलब्ध हुए। जनमत को प्रभावित करने के लिए मुद्रण कला का व्यावहारिक रूप सामने आया। पहला मुद्रित विज्ञापन कौन सा है इस बारे में मतभेद है। कुछ लोग मानते हैं कि सन् 1473 ई0 में इंग्लैण्ड में विलियम कैक्सटन ने सर्वप्रथम अंग्रेजी भाष में पहला विज्ञापन एक परर्चे के रूप में प्रकाशित किया जिसमें धार्मिक नियमों की पुस्तक की बिक्री के लिए सम्भावी ग्राहकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया था, इसके साथ ही किताबें तथा समाचार पत्र समान्य रूप से लोगों को भी उपलब्ध होने लगे। मुद्रण की शुरूआत के साथ ही नियमित प्रकाशन की भी शुरूआत हुई, जिसका सर्वाधिक उपयोग वयापारियों ने किया, लेकिन इतिहासकार फेंक प्रेंस्वी के अनुसार – 'मक्यूरियम ब्रिटानिक्स' पुस्तक में एक विज्ञापित घोषणा के रूप में विज्ञापन का पहला रूप सामने आया। हेनरी सैंपसन के अनुसार – सन् 1650 में सर्वप्रथम विज्ञापन का स्वरूप एक पुस्तक में देखने को मिला, जिसमें चोरी किए गये बारह घोड़ो को लौटाने पर पुरस्कार की घोषणा विज्ञप्ति के रूप में छपी थी। विज्ञापन की ऐतिहासिक पुष्ठभूमि इंग्लैण्ड के समाचार–पत्रों में विज्ञापन के रूप में प्रकाशित घोषणाओं में दिखाई देती है। उसके बाद चाय, कॉफी, चाकलेट, किताब आदि के विज्ञापनों के साथ–साथ खोई–पाई वस्तुओं के विज्ञापन प्रकाशन की प्रथा चल पड़ी।

अमेरिका में विज्ञापन का विकास बड़ी तीव्रगति हुआ। विजय कुलश्रेष्ठ और प्रतुल अथइया के अनुसार–सन् 1870 में अमेरिका में पहला विज्ञापन प्रकाशित हुआ था, जो उस काल की बीज कंपनियों की पहल कहा जाता है, लेकिन प्राप्त जानकारियों के अनुसार अमेरिका में सन् 1841 में पहली विज्ञापन एजेन्सी वाल्नी पॉल्मर स्थापित हो चुकी थी। अमेरिका का पहला विज्ञापन 8 मई, 1704 में 'बोस्टन न्यूज लैटर' में प्रकाशित हुआ। धीरे–धीरे सचित्र विज्ञापन की प्रथा भी शुरू हो गई। विज्ञापन में आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाने लगा। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप विज्ञापन की दुनिया में तेजी से बदलाव आने लगा। आज उच्च प्रौद्योगिकी के युग में विज्ञापन संसार को वैविध्यपूर्ण बना दिया है। विज्ञापन उद्योग एक आकर्षक उपयोग बन चुका है।

संदर्भ सूचि

1. विज्ञापन – अशोक महाजन
2. तारेश भाटिया, विज्ञापन कलाः सिद्धान्त एवं प्रयोग, दयानन्द वैदिक, स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, उरई, उत्तर प्रदेश, 1985, पृष्ठ–10 (अप्रकाशित पाण्डुलिपि)
3. Advertising Art and Idias- G.M. Rege,
4. विज्ञापन कला–एकेश्वर प्रसाद हटवाल।
5. भारतीय कला – ए0एल0 श्रीवास्तव